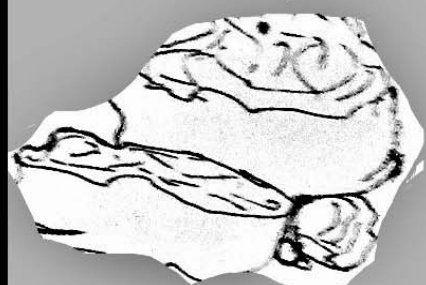


कोसी का घटवार

शेखर जोशी



कोसी का घटवार

शेखर जोशी

प्रथम दृश्य

गाना बजता है। मंच पर धीमा प्रकाश आता है। पनचक्की और दाने को अलग करने वाली चिड़िया की ध्वनि सुनाई पड़ती है। एक ताल में गुसाई का प्रवेश।

गुसाई का मन चिलम में भी नहीं लगा। मिहल की छाँह से उठकर वह फिर एक बार घट (पनचक्की) के अंदर गया। अभी खप्पर में एक-चौथाई से भी अधिक गेहूँ शेष था। खप्पर में हाथ डालकर उसने व्यर्थ ही उलटा-पलटा और चक्की के पाटों के वृत्त में फैले हुए आटे को झाड़कर एक ढेर बना दिया। बाहर आते-आते उसने फिर एक बार और खप्पर में झाँककर देखा, जैसे यह जानने के लिए कि इतनी देर में कितनी पिसाई हो चुकी हैं, परंतु अंदर की मिकदार में कोई विशेष अंतर नहीं आया था। खस्स-खस्स की ध्वनि के साथ अत्यंत धीमी गति से ऊपर का पाट चल रहा था। घट का प्रवेश द्वार बहुत कम ऊंचा था, खूब नीचे तक झुककर वह बाहर निकला। सर के बालों और बांहों पर आटे की एक हलकी सफेद पर्त बैठ गई थी।

सूत्रधार — नमस्कार गुसाई जी हो गया हमारा आटा?

गुसाई — खंभे का सहारा लेकर वह बुदबुदायाए “जा, स्साला! सुबह से अब तक दस पंसेरी भी नहीं हुआ। सूरज कहां का कहां चला गया है। कैसी अनहोनी बात!”

सूत्रधार — बात अनहोनी तो है ही। जेठ बीत रहा है। आकाश में कहीं बादलों का नाम-निशान ही नहीं। अन्य वर्षों अब तक लोगों की धान-रोपाई पूरी हो जाती थी, पर इस साल नदी-नाले सब सूखे पड़े हैं। खेतों की सिंचाई तो दरकिनार, बीज की क्या रियां सूखी जा रही हैं। छोटे नाले-गूलों के किनारे के घट महीनों से बंद हैं।

गुसाई — कहने को तो कोसी के किनारे हैं हमारा ये घट। पर इसकी भी चाल ऐसी कि लद्द घोड की चाल को मात देती हैं।

सूत्रधार — चक्की के निचले खंड में छिच्छर—छिच्छर की आवाज के साथ पानी को काटती हुई मथानी चल रही है।

गुसाई — कितनी धीमी आवाज है। अच्छे खाते—पीते ग्वालों के घर में दही की मथानी इससे ज्यादा शोर करती है। इसी मथानी का वह शोर होता था कि आदमी को अपनी बात नहीं सुनाई देती और अब तो भले नदी पार कोई बोले, ऐसा लगता है मानों यही बोल रहा हो।

सूत्रधार — हम यही बैठ कर इंतज़ार करते हैं।

गुसाई — बैठिए।

छप्प —छप्प —छप्प —पुरानी फौजी पैंट को घुटनों तक मोड़कर गुसाई पानी की गूल के अंदर चलने लगा।

सूत्रधार — अरे अरे ये क्या कर रहे हैं गुसाई जी।

गुसाई — कहीं कोई सूरख—निकास हो, तो बंद कर दे। एक बूंद पानी भी बाहर न जाए। बूंद—बूंद की कीमत है इन दिनों।

सूत्रधार — अच्छा ठीक है। चलता हूँ। आटा बाद में आकर ले जाऊँगा।

गुसाई — जैसी आपकी मर्जी।

सूत्रधार — और मैं वहाँ से चल दिया। प्रायः आधा फलांग चलकर वह बांध पर पहुँचा। नदी की पूरी चौड़ाई को घेरकर पानी का बहाव घट की गूल की ओर मोड़ दिया गया था। किनारे की मिट्टी—घास लेकर उसने बांध में एक—दो स्थान पर निकास बंद किया और फिर गूल के किनारे—किनारे चलकर घट पर आ गया। अंदर जाकर उसने फिर पाटों के वृत्त में फैले हुए आटे को बुहारकर ढेरी में मिला दिया। खप्पर में अभी थोड़ा—बहुत गेहूँ शेष था। वह उठकर बाहर आया। दूर रास्ते पर एक आदमी सर पर पिसान रखे उसकी ओर जा रहा था।

आदमी — बड़ी गरमी है, घटवार जी पानी—वानी पिलाओ। गुसाई उसकी ओर देखता है फिर गूल कीतफ इशारा करता है। हॉ हॉ ठीक है हम खुद ही पी लेंगे।

गुसाई — “हैं हो! यहां लंबर देर में आएगा। दो दिन का पिसान अभी जमा है। ऊपर उमेदसिंह के घट में देख लो।”

उस व्यक्ति ने मुड़ने से पहले एक बार और प्रयत्न किया। खूब ऊँचे स्वर में पुकारकर वह बोला,

आदमी – जरूरी है, जी! पहले हमारा लंबर नहीं लगा दोगे?

गुसाई – गुसाई होंठों-ही-होंठों में मुस्कराया, रसाला कैसे चीखता है, जैसे घट की आवाज इतनी हो कि मैं सुन न सकूँ! कुछ कम ऊंची आवाज में उसने हाथ हिलाकर उत्तर दे दिया, 'यहां जरूरी का भी बाप रखा है, जी! तुम ऊपर चले जाओ!'

आदमी वापस जाने के लिए अपनी बोरी उठाने की कोशिश करता है पर बोरी नहीं उठती, आदमी मदद के लिए लाचार दृष्टि से गुसाई की तरफ देखता है गुसाई उसकी मदद करता है

वह आदमी लौट गया।

सूत्रधार – मिहल की छांव में बैठकर गुसाई ने लकड़ी के जलते कुंदे को खोदकर चिलम सुलगाई और गुड-गुड करता

धुआं उड़ाता रहा। खस्सर-खस्सर चक्की का पाट चल रहा था। किट-किट-किट-किट खप्पर से दाने गिरानेवाली चिड़िया पाट पर टकरा रही थी।

छिच्छर-छिच्छर की आवाज के साथ मथानी पानी को काट रही थी। और कहीं कोई आवाज नहीं। कोसी के बहाव में भी कोई ध्वनि नहीं। रेती-पाथरों के बीच में टखने-टखने पत्थर भी अपना सर उठाए आकाश को निहार रहे थे।

गुसाई – दोपहरी ढलने पर भी इतनी तेज धूप! कहीं कोई चिरैया भी नहीं बोलती। किसी प्राणी का प्रिय-अप्रिय स्वर नहीं। क्यों उस व्यक्ति को लौटा दिया? लौट तो वह जाता ही, घट के अंदर टच्च पड़े पिसान के थैलों को देखकर। दो-चार क्षण की बातचीत का आसरा ही होता।

सूत्रधार – गुसाई जी आपको ये अकेलापन काटने को नहीं दौड़ता। सूखी नदी के किनारे का ये अकेलापन नहीं, जिंदगी-भर साथ देने के लिए जो ये अकेलापन आपके द्वार पर धरना देकर बैठ गया है, वो। जिसे आप अपना कह सके, ऐसे किसी प्राणी का स्वर आपके लिए नहीं।

गुसाई – जोशी जी पालतू कुत्ते-बिल्ली का स्वर भी नहीं है। वो भी सोचते होंगे क्या ठिकाना ऐसे मालिक का, जिसका घर-द्वार नहीं, बीबी-बच्चे नहीं, खाने-पीने का भी ठिकाना नहीं —

गुसाई – घुटनों तक उठी हुई पुरानी फौजी पैंट के मोड़ को गुसाई ने खोला। गूल में चलते हुए थोड़ा भाग भीग गया था। पर इस गर्मी में उसे भीगी पैंट की यह

शीतलता अच्छी लगी। पैट की सलवटों को ठीक करते-करते गुसाई ने हुक्के की नली से मुंह हटाया। उसके होठों में बाएं कोने पर हलकी-सी मुस्कान उभर

आई। बीती बातों की याद गुसाई सोचने लगा, इसी पैट की बदौलत यह अकेलापन उसे मिला है —नहीं, याद करने को मन नहीं करता। पुरानी, बहुत पुरानी बातें वह भूल गया है, पर हवालदार साहब की पैट की बात उसे नहीं भूलती। ऐसी ही फौजी पैट पहनकर हवालदार धरमसिंह आया था, लॉन्ड्री की धुली, नोकदार, क्रीजवाली पैट! वैसी ही पैट पहनने की महत्वाकांक्षा लेकर गुसाई फौज में गया था।

दृश्य दो

हवलदार धरम सिंह का प्रवेश, छोटा गोसाई उनके पीछे पीछे चल रहा है। धरम सिंह उसे खाने के लिए मिठाई देता है गुसाई से पीछा छुड़ाने के लिए परंतु गुसाई हवलदार धरमसिंह का पीछा नहीं छोड़ता और बार बार गुसाई हवलदार साहब की पैट को घूरता है और मुस्कराने लगता है।

सूत्रधार — दो दिन हो गये हवलदार साहब परेशान हो गये जहाँ वो जाते गुसाई पीछे पीछे हो लेते, एक दिन तो गजब हो गया छुट्टी खत्म हो चली थी धरमसिंह को ड्यूटी पर जाना था तैयार होने के लिए जब वो अपनी युनिफॉर्म पहनने गये तो उनकी युनिफॉर्म पैट गायब थी हवलदार साहब की हवाईयाँ उड़ गई तभी उन्हें किसी ने आवाज लगाकर बाहर बुलाया उन्होंने बाहर आकर देखा तो गुसाई उनकी पैट पहनकर परेड कर रहा है और साथ के बच्चे उसका मजाक उड़ा रहे हैं और बार बार उसको सल्यूट भर रहे हैं।

हवलदार — [गुस्से से पगलाकर] अरे ओ लड़के पागला गये हो क्या एक देंगे कॅनटॉप पर तो सारी मस्ती निकल जाएगी हम तभी कहें तुम हमारा पीछा क्यों किया करते थे। [हवलदार साहब पैट उतरवाने का उपक्रम करते हैं]

सूत्रधार — सभी बच्चों की हसी एकदम गायब थी। कोई भी हसने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था। पर गुसाई महाराज भी कम खुदा ही थोड़े थे। कस कर पैट को पकड़ लिए और जोर जोर से कहने लगे।

गुसाई — चाचा हम नहीं छोड़ेंगे पैट को हमको जान से भी ज्यादा प्यारी है ये पैट आप चाहे जो सजा दो हम ना छोड़ेंगे

सूत्रधार — गुसाई की इस तरह पैट के लिए दीवानगी देख हवलदार साहब भी हैरत में थे बाकी लोग ये तमाशा देख मंद मंद मुस्कुरा रहे थे जिससे हवलदार साहब का गुस्सा और बढ़ गया था

हवलदार — ऐ...लड़का अब बहुत तमाशा कर दिया, सीधे से हमारी पैट वापस कर दे नहीं तो [हवलदार साहब ने जोर का तमाचा मारा]

सूत्रधार — तमाचे की आवाज के साथ ही सन्नाटा छा गया सब की हसी गयब थी आवाज सिर्फ गुसाई जी की थी अब तक गुसाई जी के कपोल पर सृजन आ चुकी थी पर गुसाई जी हार मानने वालों में से नहीं थे

गुसाई — चाचा आप मरो हमे आपका अधिकार है, पर ये नोकदार पैट हमको दे दो [और दहाड़मार कर रौने लगा]

सूत्रधार — एक बालक को इस पैट के लिए इस तरह तड़पता देख और उसकी बाल सुलभ याचना ने हवलदार धर्मसिंह के फौजी हृदय को भी पिघला दिया था वो अब नर्म पड़ने लगे थे और भावुक हो कर गुसाई जी से बोले।

हवलदार — उठो गुसाई महाराज, और हमे क्षमा करो (हवलदार मुस्कुरा दिए) तुम चाहो तो ये पैट रख सकते हो परंतु तुमने जिस प्रकार इस पैट को हासिल किया है वो गलत है चोरी करना महापाप है (फिर पुचकार कर) मैं आशा करता हूँ अब तुम कभी चोरी नहीं करोगे अगर कोई चीज पानी हो तो मेहनत, ईमानदारी से प्राप्त करो

गुसाई — [गुसाई का चेहरा खुशी से चमक उठा और अश्रु मिश्रित मुस्कान के साथ बोला, धन्यवाद चाचा, आप बहुत अच्छे हो, चाचा मैं आपके जैसा पैट पहनने के लिए खूब मेहनत करूंगा मुझे क्या करना होगा

हवलदार — (हसते हुए प्यार से) तुम भी मेरी तरह फौज में भरती हो जाओ पैट भी मिलेगा और सम्मान भी हा हा हा ——— समझे अच्छा चलता हूँ मुझे वापस जाना है काफी देर हो चुकी है (हवलदार साहब जाने लगते हैं)

सूत्रधार — पैट मिलते ही जैसे गुसा के सारे स्वप्न पूरे हो गये हो, जैसे उन्हे बेस कीमती हीरा मिल गया हो छोटे गुसाई जी का स्वप्न ही था की उनके पास एक कलफदार नोकवली पैट हो जो उन्हे मिल गई थी उनकी आँखे खुशी से चमक रही थी और चिल्लाकर जोर से बोल रहे थी

गुसाई — धन्यवाद चाचा आपका एहसान चाचा मैं आपसे वादा करता हूँ मैं फौज में जाऊँगा पैट के लिए मैं कही भी जा सकता हूँ चाचा

सूत्रधार — पैट की बाल सुलभ ज़िद अब बड़े होते ही गुसाई की महत्वाकांक्षाओं में परिवर्तित हो गयी थी पैट के साथ और कितनी स्मृतियाँ संबद्ध है उस बार छुट्टियों की बात है कौन महीना—६ हॉ बैसाख की बात है

दृश्य तीन

गुसाई की प्रवेश अब वो पहले से लंबा और मजबूत शरीर फौजी यूनिफॉर्म में खूब फँब रहा है गॉओं में हल्ला हो रहा है गुसा के सारे दोस्त दौड़ कर आ गये और उसे कंधे पर उठा लिया झूमते नाचते गाते चलने लगे और

घर पर जा कर आँगन में बैठे है

सूत्रधार — (पीछे सीन चल रहा है) सर पर क्रास खुखरी की क्रेस्ट वाली, काली, किशतीनुमा टोपी को तिरछा रखकर, फौजी वर्दी वह पहली बार एनुअल—लीव पर घर आया, तो चीड़ वन की आग की तरह खबर इधर—उधर फैल गई थी। बच्चे—बूढ़े, सभी उससे मिलने आए थे। चाचा का गोठ एकदम भर गया था, ठसाठस्स। बिस्तर की नई, एकदम साफ, जगमग, लाल—नीली धारियोंवाली दरी आँगन में बिछानी पड़ी थी लोगों को बिठाने के लिए। खूब याद है, आँगन का गोबर दरी में लग गया था। बच्चे—बूढ़े, सभी आए थे। सिर्फ चना—गुड या हल्द्वानी के तंबाकू का लोभ ही नहीं था, कल के शर्मीले गुसाई को इस नए रूप में देखने का कौतूहल भी था। पर गुसाई की आँखें उस भीड़ में जिसे खोज रही थीं, वह वहां नहीं थी।

(सारे दोस्त छेड़ते हैं)

दोस्त1 — क्या हुआ फौजी गोसाईं तुम किसे ढूँढने की कोशिश कर रहे हो

दोस्त2 — वो नहीं आई, अकेले में मिलेगी हा हा हा ———

सूत्रधार — नाला पार के अपने गांव से भैंस के कटया को खोजने के बहाने दूसरे दिन लछमा आई थी। पर गुसाईं उस दिन उससे मिल न सका। गंव के छोकरे ही गुसाईं की जान को बवाल हो गए थे। (म्यूज़िक चल रहा है)

लछमा आती है जैसे ही गुसाईं उसकी तरफ बढ़ता है तभी लड़कों का प्रवेश होता है और गुसाईं शर्मा जाता है

घबराकर लड़कों के साथ चला जाता है लछमा मुह बना कर चली जाती है

दूसरी तरफ से लछमा फिर आती है गुसाईं चुपके चुपके दबे पाँव लछमा की तरफ आता है तभी बुर्जुा नरसिंह प्रधान आ जाते हैं गुसाईं को ना चाहते हुए भी नरसिंह जी के पास बैठना पड़ जाता है लछमा गुस्से से मुह चिढ़ाती है, और पैर पटकती हुई, चली जाती है गुसाईं लाजा जाता है

सूत्रधार — बुढ़े नरसिंह प्रधान उन दिनों ठीक ही कहते थे, आजकल गुसाईं को देखकर सोबनियां का लडका भी अपनी फटी घेर की टोपी को तिरछी पहनने लग गया है। दिन—रात बिल्ली के बच्चों की तरह छोकरे उसके पीछे लगे रहते थे, सिगरेट—बीड़ी या गपशप के लोभ में।

एक दिन बड़ी मुश्किल से मौका मिला था उसे। लछमा को पात—पतेल के लिए जंगल जाते देखकर वह छोकरों से कांकड़ के शिकार का बहाना बनाकर अकेले जंगल को चल दिया था।

गुसाईं — अरे सुनो तुम लोग शाम को चौपाल पे मिलना अब मैं जंगल में कांकड़ का शिकार करने जा रहा हूँ

दोस्त — देखना गुसाईं तू कहीं हिरनी का शिकार मत बन जाना (सब हसते हैं)

(म्यूज़िक और गाना)

दृश्य चार

गांव की सीमा से बहुत दूर, काफल के पेड़ के नीचे गुसाई के घुटने पर सर रखकर, लेटी-लेटी लछमा काफल खा रही थी। पके, गदराए, गहरे लाल-लाल काफल। खेल-खेल में काफलों की छीना-झपटी करते गुसाई ने लछमा की मुठ्ठी भींच दी थी। टप-टप काफलों का गाढ़ा लाल रस उसकी पैंट पर गिर गया था।

गुसाई —ये क्या किया लछमा मेरी पैंट खराब कर दी।

लछमा —‘इसे यहीं रख जाना, मेरी पूरी बांह की कुर्ती इसमें से निकल आएगी।’(वह खिलखिलाकर अपनी बात पर स्वयं ही हंस दी थी।)

गुसाई — (हसते हुए बहुत ही रोमैंटिक अंदाज में) तेरे लिए मखमल की कुरती ला दूंगा मेरी सुआ (गुसाई कलाई पकड़ता है)

लछमा— तू कब बड़ा होगा गुसाई (मजाक में)

गुसाई— अरे फौजी बन गया हू मेरे समझदार होने का यही सबूत है

लछमा — अच्छा जी अगर समझदार हो तो मेरी कलाई को दुश्मन की गर्दन की तरह क्यों पकड़े हो (गुसाई शर्मा जाता है) अच्छा ये बता अब हम चोरी चोरी कब तक मिलते रहेंगे

गुसाई — मैं जल्द ही तेरे बाबा से बात करूंगा , थोड़ा समय दे एक दो दिन में जरूर आउगा तेरे घर

लछमा — ऐसा ना हो जब तक तू आए तब तक कोई और मेरे लिए मखमल की कुर्ती और ओढ़नी लेकर आ जाए

(लछमा उदास हो जाती है)

गुसाई— (लछमा को मानते हुए) अरे तू उदास क्यों होती है मैं कल ही तेरे घर तेरा हाथ माँगने आता हूँ तेरे बाबा से बाबा आपकी प्यारी लाडली का हाथ मेरे हाँथों में दे दो अब मैं इस काबिल हो गया हूँ की अपनी पैट खुद खरीद सकूँ

(और हसने लगता है) अच्छी खासी नौकरी है मेरी, फौजी हूँ तेरे बाबा इनकार नहीं कर पाएँगे अब तो हस दे

सूत्रधार — अगले दिन गुसाई लछमा के घर मिठाई का डिब्बा लेकर पहुँचा और लछमा के बाबा के सामने अपने दिल की बात रखी अगर गुसाई के माता पिता होते तो वो बात करने जाते पर ये जिम्मेदारी भी गुसाई को उठानी थी

(दृश्य परिवर्तन लछमा का घर)

लछमा कोने में खड़ी है उसके बाबूजी बैठे हैं पास ही गुसाई बैठा है गुसाई घबराहट के साथ लछमा के पिता जी से बात करने की कोशिश करता है

लछमा के बाबा — क्या हाल है गुसाई सब ठीक है बहुत खुशी हुई तुम्हें देख कर (गुसाई को देख कर) तुम्हारी तबीयत तो ठीक है

गुसाई — (हड़बड़कर)जी—जी जी ठीक है नहीं ———नहीं मेरा मतलब है तबीयत ठीक है (लाजा जाता है)

बाबा — तो ये पानी पीते में तुम्हारा हाँथ क्यों कांप रहा है

गुसाई — जी वो ऐसा कुछ भी नहीं है बस ऐसे ही (गुसाई अपनी घबराहट पर काबू पाते हुए) जी आपसे जरूरी बात करने आया था (बाबूजी गुसाई की बात काटते हुए बोले)

बाबूजी — अगर लछमा से शादी की बात करने आए हो तो बेटा ये हमसे ना हो सकेग हमे भी अपनी बेटी का भला बुरा सब देखना है जिसके आगे पीछे भाई बहन नहीं, माई बाप नहीं परदेस मे बंदूक की नोक पर जान रखने वाले को छोकरी कैसे दे दें हम

(गुसाई सकपका जाता है शरीर निढाल और जड़ हो जाता है फिर डगमग आँखों मे आँसू लिए वहाँ से जाने लगता है लछमा दूर से एक कोने मे उसे जाते हुए देख रही है पथराई आँखों से)

(बिरहा गाना और म्यूजिक)

सूत्रधार — वज्राघात गुसाई का सारा उत्साह जाता रहा, वो भारी कदमों से चलता हुआ अपने ठिकाने पर पहुँचा क्या गलत कहा लछमा के बाबा ने उनके कहे हुए एक एक शब्द गुसाई के कानों मे गूँज रहे थे आज शायद पहली बार गुसाई को अपने अकेलेपन का एहसास हुआ, ना आगे ना पीछे कोई बंदूक की नोक पर जान रखने वाले को कौन छोकरी दे वो कुछ समझ नहीं पा रहा था पैट की चाह मे फौज मे गया था पैट ले कर लौटा तो जिंदगी का अकेलापन भी उसके साथ आ गया पर लछमा, लछमा को वो दिल से नहीं निकल पाया लछमा को मखमल की कुरती किसने पहनाई होगी — पहाड़ी पार के रामुआ ने जो तुरी निसर्ग ले कर उसे ब्याहने आया था

उसी साल मंगसिर की एक ठंडी, उदास शाम को गुसाई की यूनिट के सिपाही किसनसिंह ने क्वार्टर-मास्टर स्टोर के सामने खड़े-खड़े उससे कहा था

किसनसिंह — हैलो गुसाई हाउ आर यू?

गुसाई — सब ठीक ठाक है किसन, इस साल बड़ी लम्बी छुट्टी काट कर आए

किसनसिंह — 'हमारे गांव के रामसिंह ने ज़िंदगी की, तभी छुट्टियां बढ़ानी पड़ीं। इस साल उसकी शादी थी। खूब अच्छी औरत मिली है, यार! शक्ल-सूरत भी खूब है, एकदम पटाखा! बड़ी हंसमुख है। तुमने तो देखा ही होगा, तुम्हारे गांव के नजदीक की ही है। लछमा-लछमा कुछ ऐसा ही नाम है।'।

गुसाई — (अपने जज्बातों पर काबू करते हुए) ओह क्या—अच्छा— अच्छा हाँ हाँ शायद मैने भी ये नाम कही सुना है हाँ हाँ वो उस गाँव की ही है (और बहाना बना कर चला जाता है)

सूत्रधार — रम-डे थे उस दिन। हमेशा आधा पैग लेनेवाला गुसाईं उस दिन पेशी करवाई थी —मलेरिया प्रिकॉशन न करने के अपराध में। सोचते—सोचते गुसाईं बुदबुदाया,

गुसाईं — 'स्साल एडजुटेन्ट!'

सूत्रधार — गुसाईं सोचने लगा, उस साल छुट्टियों में घर से बिदा होने से एक दिन पहले वो मौका निकालकर लछमा से मिला था।

(गुसाईं सोच रहा है कोने में प्रकाश बिंब लछमा खड़ी है)

लछमा — 'गंगनाथज्यू की कसम, जैसा तुम कहोगे, मैं वैसा ही करूंगी!' (रोते हुए प्रकाश बिंब खत्म)

सूत्रधार — वर्षों से वो सोचता आया है की कभी लछमा मिलेगी तो वो अवश्य कहेगा

गुसाईं — गंगनाथ का जागर लगाकर प्रायश्चित जरूर कर ले। देवी—देवताओं की झूठी कसमें खाकर उन्हें नाराज करने से क्या लाभ है जिस पर भी गंगनाथ का कोप हुआ, वो कभी फल—फूल नहीं पाया।

दृश्य परिवर्तन घाट

सूत्रधार — पर लछमा से कब भेंट होगी, यह वह नहीं जानता। लड़कपन से संगी—साथी नौकरी—चाकरी के लिए मैदानों में चले गए हैं। गांव की ओर जाने का उसका मन नहीं होता। लछमा के बारे में किसी से पूछना उसे अच्छा नहीं लगता। जितने दिन नौकरी रही, वह पलटकर अपने

गांव नहीं आया। एक स्टेशन से दूसरे स्टेशन का वालंटियरी ट्रांसफर लेनेवालों की लिस्ट में नायक गुसाईंसिंह का नाम ऊपर आता रहा — लगातार पंद्रह साल तक। पिछले बैसाख में ही वह गांव लौटा, पंद्रह साल बाद, रिजर्व में आने पर। काले बालों को लेकर गया था, खिचड़ी बाल लेकर लौटा। लछमा का हठ उसे अकेला बना गया।

आज इस अकेलेपन में कोई होता, जिसे गुसाईं अपनी जिंदगी की किताब पढ़कर सुनाता! शब्द—शब्द, अक्षर—अक्षर कितना देखा, कितना सुना और कितना अनुभव किया है उसने — पर नदी किनारे यह तपती रेतए पनचक्की की खटर—पटर और मिहल की छाया में ठंडी चिलम को निष्प्रयोजन गुडगुडाता गुसाईं। और चारों ओर अन्य कोई नहीं। एकदम निर्जन, निस्तब्ध, सुनसान —

एकाएक गुसाईं का ध्यान टूटा। पहाड़ी के बीच की पगडंडी से सर पर बोझा लिए एक नारी आकृति उसी ओर चली आ रही थी। गुसाईं ने सोचा वहीं से आवाज देकर उसे लौटा दे। कोसी के चिकने, काई लगे पत्थरों पर कठिनाई से चलकर उसे वहां तक आकर केवल निराश लौट जाने को क्यों वह बाध्य करे।

गुसाईं — दूर से चिल्ला—चिल्लाकर पिसान स्वीकार करवाने की लोगों की आदत से मैं तंग आ गया हू। आने दो जो कोई भी हो, यहाँ आकर घट में टच्च पड़ी बोड़ियों को देख खुद ही लौट जाएगा (वह आकृति अब तक पगडंडी छोड़कर नदी के मार्ग में आ पहुंची थी।)

सूत्रधार — चक्की की बदलती आवाज को पहचानकर गुसाईं घट के अंदर चला गया। खप्पर का अनाज समाप्त हो चुका था। खप्पर में एक कम अन्नवाले थैले को उलटकर उसने अन्न का निकास रोकने के लिए काठ की चिड़ियों को उलटा कर दिया। किट—किट का स्वर बंद हो गया। वह जल्दी—जल्दी आटे को थैले में भरने लगा। घट के अंदर मथानी की छिच्छर—छिच्छर की आवाज भी अपेक्षाकृत कम सुनाई दे रही थी। केवल चक्की ऊपरवाले पाट की घिसटती हुई घरघराहट का हल्का—धीमा संगीत चल रहा था। तभी गुसाईं ने सुना अपनी पीठ के पीछे घट के ढाँ परए इस संगीत से भी मधुर एक नारी का कंठस्वरए

नारी —‘कब बारी आएगीए जीध रात की रोटी के लिए भी घर में आटा नहीं है।’ (गुसाईं स्तब्ध था आश्चर्य से देखने लग)

सूत्रधार — सर पर पिसान रखे एक स्त्री उससे यह पूछ रही थी। गुसाई को उसका स्वर परिचित—सा लग। चौंककर उसने पीछे मुड़कर देखा। कपड़े में पिसान ढीला बंधा होने के कार। बोझ का एक सिरा उसके मुख के आगे आ गया था। गुसाई उसे ठीक से नहीं देख पाया, लेकिन तब भी उसका मन जैसे आशंकित हो उठा। अपनी शंका का समाधान करने के लिए वह बाहर आने को मुड़ा, लेकिन तभी फिर अंदर जाकर पिसान के थैलों को इधर—उधर रखने लगा। काठ की चिड़ियां किट—किट बोल रही थीं और उसी गति के साथ गुसाई को अपने हृदय की धड़कन का आभास हो रहा था।

घट के छोटे कमरे में चारों ओर पिसे हुए अन्य का चूर्ण फैल रहा था, जो अब तक गुसाई के पूरे शरीर पर छा गया था। इस कृत्रिम सफेदी के कारण वह वृद्ध—सा दिखाई दे रहा था। स्त्री ने उसे नहीं पहचाना।

उसने दुबारा वे ही शब्द दुहराए।

नारी — ‘कब बारी आएगी, जी? रात की रोटी के लिए भी घर में आटा नहीं है।’

सूत्रधार — दूसरी बार के प्रश्न को गुसाई न टाल पाया, उत्तर देना ही पड़ा

गुसाई — ‘यहां पहले ही टीला लगा है, देर तो होगी ही।’ [उसने दबे—दबे स्वर में कह दिया।]

सूत्रधार — स्त्री ने किसी प्रकार की अनुनय—विनय नहीं की। शाम के आटे का प्रबंध करने के लिए वह दूसरी चक्की का सहारा लेने को लौट पड़ी।

गुसाई झुककर घट से बाहर निकला। मुड़ते समय स्त्री की एक झलक देखकर उसका संदेह विश्वास में बदल गया था। हताश—सा वह कुछ क्षणों तक उसे जाते हुए देखता रहा और फिर अपने हाथों तथा सिर पर गिरे हुए आटे को झाड़कर एक—दो कदम आगे बढ़ा। उसके अंदर की किसी अज्ञात शक्ति ने जैसे उसे वापस जाती हुई उस स्त्री को बुलाने को बाध्य कर दिया। आवाज देकर उसे बुला लेने को उसने मुंह खोला, परंतु आवाज न दे सका। एक झिझक, एक असमर्थता थी, जो उसका मुंह बंद कर रही थी। वह स्त्री नदी तक पहुंच चुकी थी। गुसाई के अंतर में तीव्र उथल—पुथल मच गई। इस बार आवेग इतना तीव्र था कि वह स्वयं को नहीं रोक पाया, लड़खड़ाती आवाज में उसने पुकारा,

गुसाई — 'य'लछमा!' (घबराहट के कारण वह पूरे जोर से आवाज नहीं दे पाया था। स्त्री ने यह आवाज नहीं सुनी। इस बार गुसाई ने स्वस्थ होकर पुनः पुकारा)

लछमा!..

सूत्रधार — लछमा ने पीछे मुड़कर देखा। मायके में उसे सभी इसी नाम से पुकारते थे, यह संबोधन उसके लिए स्वाभाविक था। परंतु उसे शंका शायद यह थी कि चक्कीवाला एक बार पिसान स्वीकार न करने पर भी दुबारा उसे बुला रहा है या उसे केवल भ्रम हुआ है। उसने वहीं से पूछा,

लछमा — मुझे पुकार रहे ह, जी?

गुसाई — (गुसाई ने संयत स्वर में कहा,) 'हां, ले आए हो जाएगा।'

लछमा क्षण—भर रुकी और फिर घट की ओर लौट आई। अचानक साक्षात्कार होने का मौका न देने की इच्छा से गुसाई व्यस्तता का प्रदर्शन करता हुआ मिहल की छांह में चला गया। लछमा पिसान का थैला घट के अंदर रख आई। बाहर निकलकर उसने आंचल के कोर से मुंह पोंछा। तेज धूप में चलने के कारण उसका मुंह लाल हो गया था। किसी पेड़ की छाया में विश्राम करने की इच्छा से उसने इधर—उधर देखा। मिहल के पेड़ की छाया में घट की ओर पीठ किए गुसाई बैठा हुआ था। निकट स्थान में दाडिम के एक पेड़ की छांह को छोड़कर अन्य कोई बैठने लायक स्थान नहीं था। वह उसी ओर चलने लगी।

लछमा — (गुसाई की उदारता के कारण ऋणी—सी होकर ही जैसे उसने निकट आते—आते कहा) 'तुम्हारे बाल—बच्चे जीते रहें, घटवारजी! बड़ा उपकार का काम कर दिया तुमने! ऊपर के घट में भी जाने कितनी देर में लंबर मिलता।'

गुसाई — (अजाज संतति के प्रति दिए गए आशीर्वचनों को गुसाई ने मन—ही—मन विनोद के रूप में ग्रहण किया। इस कारण उसकी मानसिक उथल—पुथल कुछ कम हो गई। लछमा उसकी ओर देखें, इससे पूर्व ही उसने कहा,) 'जीते रहे तेरे बाल—बच्चे लछमा! मायके कब आई?'

सूत्रधार — गुसाई ने अंतर में घुमडती आंधी को रोककर यह प्रश्न इतने संयत स्वर में कियाए जैसे वह भी अन्य दस आदमियों की तरह लछमा के लिए एक साधारण व्यक्ति हो। दाडिम

की छाया में पात-पतेल झाड़कर बैठते लछमा ने शंकित दृष्टि से गुसाई की ओर देखा। कोसी की सूखी धार अचानक जल-प्लावित होकर बहने लगती, तो भी लछमा को इतना आश्चर्य न होता, जितना अपने स्थान से केवल चार कदम की दूरी पर गुसाई को इस

रूप में देखने पर हुआ। विस्मय से आंखें फाड़कर वह उसे देखे जा रही थी, जैसे अब भी उसे विश्वास न हो रहा हो कि जो व्यक्ति उसके सम्मुख बैठा है, वह उसका पूर्व-परिचित गुसाई ही है।

लछमा — 'तुम.....? जाने लछमा क्या कहना चाहती थी, शेष शब्द उसके कंठ में ही रह गए।

गुसाई — 'हां, पिछले साल पल्टन से लौट आया था, वक्त काटने के लिए यह घट लगवा लिया।' गुसाई ने ही पूछा,

'बाल-बच्चे ठीक हैं?

लछमा — (आंखें जमीन पर टिकाए, गरदन हिलाकर संकेत से ही उसने बच्चों की कुशलता की सूचना दे दी। जमीन पर गिरे एक दाडिम के फूल को हाथों में लेकर लछमा उसकी पंखुडियों को एक-एक कर निरुद्देश्य तोड़ने लगी और गुसाई पतली सीक लेकर आग को कुरेदता रहा। बातों का क्रम बनाए रखने के लिए गुसाई ने पूछा)

गुसाई — 'तू अभी और कितने दिन मायके ठहरनेवाली है?'

अब लछमा के लिए अपने को रोकना असंभव हो गया। टप-टप-टप, वह सर नीचा किए आंसू गिराने लगी। सिसकियों के साथ-साथ उसके उठते-गिरते कंधों को गुसाई देखता रहा। उसे यह नहीं सूझ रहा था कि वह किन शब्दों में अपनी सहानुभूति प्रकट करे।

सूत्रधार — इतनी देर बाद सहसा गुसाई का ध्यान लछमा के शरीर की ओर गया। उसके गले में चरेऊ (सुहाग-चिह्न) नहीं था। हतप्रभ-सा गुसाई उसे देखता रहा। अपनी व्यावहारिक अज्ञानता पर उसे बेहद झुंझलाहट हो रही थी। आज अचानक लछमा से भेंट हो जाने पर वह उन सब बातों को भूल गया, जिन्हें वह कहना चाहता था। इन

क्षणों में वह केवल-मात्र श्रोता बनकर रह जाना चाहता था। गुसाई की सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि पाकर लछमा आंसू पोंछती हुई अपना दुखड़ा रोने लगी

लछमा — 'जिसका भगवान नहीं होता, उसका कोई नहीं होता। जेठ-जेठानी से किसी तरह पिंड छुड़ाकर यहां मां की बीमारी में आई थी, वह भी मुझे छोड़कर चली गई। एक अभागा

मुझे रोने को रह गया है, उसी के लिए जीना पड़ रहा है। नहीं तो पेट पर पत्थर बांधकर कहीं डूब मरती, जंजाल कटता।’

गुसाई — ‘यहां काका-काकी के साथ रह रही हो?’

लछमा — ‘मुश्किल पड़ने पर कोई किसी का नहीं होता, जी! बाबा की जायदाद पर उनकी आंखें लगी हैं, सोचते हैं, कहीं मैं हक न जमा लूं। मैंने साफ-साफ कह दिया, मुझे किसी का कुछ लेना-देना नहीं। जंगलात का लीसा ढो-ढोकर अपनी गुजर कर लूंगी, किसी की आंख का कांटा बनकर नहीं रहूंगी।’

गुसाई ने किसी प्रकार की मौखिक संवेदना नहीं प्रकट की। केवल सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि से उसे देखता-भर रहा। दाडिम के वृक्ष से पीठ टिकार लछमा घुटने मोड़कर बैठी थी। गुसाई सोचने लगा पंद्रह-सोलह साल किसी की जिंदगी में अंतर लाने के लिए कम नहीं होते। समय का यह अंतराल लछमा के चेहरे पर भी एक छाप छोड़ गया था। पर उसे लगा उस छाप के नीचे वह आज भी पंद्रह वर्ष पहले की लछमा को देख रहा है।

लछमा — ‘कितनी तेज धूप है। इस साल!’ लछमा का स्वर उसके कानों में पड़ा। प्रसंग बदलने के लिए ही जैसे लछमा ने यह बात जान-बूझकर कही हो। और अचानक उसका ध्यान उस ओर चला गया जहां लछमा बैठी थी। दाडिम की फैली-फैली अधड़कों डालों से छनकर धूप उसके शरीर पर पड़ रही थी। सूरज की एक पतली किरन न जाने कब से लछमा के माथे पर गिरी हुई एक लट को सुनहरी रंगीनी में डूबा रही थी। गुसाई एकटक उसे देखता रहा।

लछमा — ‘दोपहर तो बीत चुकी होगी’ लछमा ने प्रश्न किया तो गुसाई का ध्यान टूटा।

गुसाई — ‘हां अब तो दो बजनेवाले होंगे उधर धूप लग रही हो तो इधर आ जा छांव में।’
कहता हुआ गुसाई एक जम्हाई लेकर अपने स्थान से उठ गया।

लछमा — ‘नहीं यहीं ठीक है’

कहकर लछमा ने गुसाई की ओर देखाए लेकिन वह अपनी बात कहने के साथ ही दूसरी ओर देखने लग था। घट में कुछ देर पहले डाला हुआ पिसान समाप्ति पर था। नंबर पर रखे हुए पिसान की जगह उसने जाकर जल्दी-जल्दी लछमा का अनाज खप्पर में खाली कर दिया। धीरे-धीरे चलकर गुसाई गुल के किनारे तक गया। अपनी अंजुली से भर-भरकर उसने पानी पिया और फिर पास ही एक बंजर घट के अंदर जाकर पीतल और अलमुनियम के कुछ बर्तन लेकर आग के निकट लौट आया।

आस-पास पड़ी हुई सूखी लकड़ियों को बटोरकर उसने आग सुलगई और एक कालिख पुती बटलोई में पानी रखकर जाते-जाते लछमा की ओर मुंह कर कह गया '

गुसाई – चाय का टैम भी हो रहा है। पानी उबल जायए तो पत्ती डाल देनाए पुडिया में पड़ी है।'

लछमा ने उत्तर नहीं दिया। वह उसे नदी की ओर जानेवाली पगडंडी पर जाता हुआ देखती रही।

सूत्रधार – सडक किनारे की दुकान से दूध लेकर लौटते-लौटते गुसाई को काफी समय लग गया था। वापस आने पर उसने देखाए एक छः-सात वर्ष का बच्चा लछमा की देह से सटकर बैठा हुआ है।

लछमा – बच्चे का परिचय देने की इच्छा से जैसे लछमा ने कहाए 'इस छोकरे को घड़ी-भर के लिए भी चैन नहीं मिलता। जाने कैसे पूछता-खोजता मेरी जान खाने को यहां भी पहुंच गया है।'

गुसाई ने लय किया कि बच्चा बार-बार उसकी दृष्टि बचाकर मां से किसी चीज के लिए जिद कर रहा है। एक बार झुंझलाकर लछमा ने उसे झिडक दियाए

'चुप रह! अभी लौटकर घर जाएंगे इतनी-सी देर में क्यों मरा जा रहा हैए'

चाय के पानी में दूध डालकर गुसाई फिर उसी बंजर घट में गया। एक थाली में आटा लेकर वह गूल के किनारे बैठा-बैठा उसे रूथने लग। मिहल के पेड़ की ओर आते समय उसने साथ में दो-एक बर्तन और ले लिए। लछमा ने बटलोई में दूध-चीनी डालकर चाय तैयार कर दी थी। एक गिलास एक एनेमल का मग और

एक अलमुनियमके मैसटिन में गुसाई ने चाय डालकर आपस में बांट ली और पत्थरों से बने बेढ़े चूल्हे के पास बैठकर रोटियां बनाने का उपक्रम करने लग।

लछमा — हाथ का चाय का गिलास जमीन पर टिकाकर लछमा उठी। आटे की थाली अपनी ओर खिसकाकर उसने स्वयं रोटी पका देने की इच्छा ऐसे स्वर में प्रकट की कि गुसाई ना न कह सका।

आप रहने दीजिए ना हम कर देंगे

सूत्रधार — वह खडा-खडा उसे रोटी पकाते हुए देखता रहा। गेल-गेल डिबिया-सरीखी रोटियां चूल्हे में खिलने लगीं। वर्षों बाद गुसाई ने ऐसी रोटियां देखी थीं जो अनिश्चित आकार की फौजी लंगर की चपातियों या स्वयं उसके हाथ से बनी बेडौल रोटियों से एकदम भिन्न थीं। आटे की लोई बनाते समय लछमा के छोटे-छोटे हाथ बड़ी तेजी से घूम रहे थे। कलाई में पहने हुए चांदी के कड़े जब कभी आपस में टकरा जाते-तो खन्-खन् का एक अत्यंत मधुर स्वर निकलता। चक्की के पाट पर टकरानेवाली काठ की चिड़ियों का स्वर कितना नीरस हो सकता है! यह गुसाई ने आज पहली बार अनुभव किया। किसी काम से वह बंजर घट की ओर गया और बड़ी देर तक खाली बर्तन-डिब्बों को उठाता-रखता रहा। वह लौटकर आया तो लछमा रोटी बनाकर बर्तनों को समेट चुकी थी और अब आटे में सने हाथों को धो रही थी। गुसाई ने बच्चे की ओर देखा। वह दोनों हाथों में चाय का मग थामे टकटकी लगकर गुसाई को देखे जा रहा था।

लछमा — लछमा ने आग्रह के स्वर में कहा 'चाय के साथ खानी होंगे तो खा लो। फिर ठंडी हो जाएंगी।'

गुसाई — 'मैं तो अपने टैम से ही खाऊंग। यह तो बच्चे के लिए —' स्पष्ट कहने में उसे झिझक महसूस हो रही थीए जैसे बच्चे के संबंध में चिंतित होने की उसकी चेष्टा अनधिकार हो।

लछमा — 'न-नए जी! वह तो अभी घर से खाकर ही आ रहा है। मैं रोटियां बनाकर रख आई थीए' अत्यंत संकोच के साथ लछमा ने आपत्ति प्रकट कर दी।

बच्चा — 'अँ ए यों ही कहती है। कहां रखी थीं रोटियां घर में?' बच्चे ने रूआंसी आवाज में वास्तविक व्यक्ति की बातें सुन रहा था और रोटियों को देखकर उसका संयम ढीला पड़ गया था।

लछमा — 'चुप!' आंखें तरेरकर लछमा ने उसे डांट दिया। बच्चे के इस कथन से उसकी स्थिति हास्यास्पद हो गई थीए इस कार। लज्जा से उसका मुंह आरक्त हो उठा।

गुसाई — बच्चा हैए भूख लग आई होगी डांटने से क्या फायदा? गुसाई ने बच्चे का पर्ा लेकर दो रोटियां उसकी ओर बढ़ा दीं। परंतु मां की अनुमति के बिना उन्हें स्वीकारने का साहस बच्चे को नहीं हो रहा था। वह ललचाई दृष्टि से कभी रोटियों की ओरए कभी मां की ओर देख लेता था।

बच्चा — गुसाई के बार-बार आग्रह करने पर भी बच्चा रोटियां लेने में संकोच करता रहाए तो लछमा ने उसे झिडक दियाए 'मर! अब ले क्यों नहीं लेता? जहां जाएगा वहीं अपने लच्छन दिखाएगा!'

इससे पहले कि बच्चा रोना शुरू कर दें गुसाई ने रोटियों के ऊपर एक टुकड़ा गुड का रखकर बच्चे के हाथों में दिया। भरी-भरी आंखों से इस अनोखे मित्र को देखकर बच्चा चुपचाप रोटी खाने लगए और गुसाई कौतुकपूर्ण दृष्टि से उसके हिलते हुए होठों को देखता रहा। इस छोटे-से प्रसंग के कार। वातावर। में एक तनाव-सा आ गया थाए जिसे गुसाई और लछमा दोनों ही अनुभव कर रहे थे। स्वयं भी एक रोटी को चाय में डुबाकर खाते-खाते गुसाई ने जैसे इस तनाव को कम करने की कोशिश में ही मुस्कराकर कहाए '

गुसाई — 'लोग ठीक ही कहते हैंए औरत के हाथ की बनी रोटियों में स्वाद ही दूसरा होता है।'

लछमा ने करूँ। दृष्टि से उसकी ओर देखा। गुसाई हो होकर खोखली हंसी हंस रहा था।
हो हो हो ३. 'कुछ साग-सब्जी होतीए तो बेचारा एक-आधी रोटी और खा लेता।' गुसाई ने
बच्चे की ओर देखकर अपनी विवशता प्रकट की।

लछमा — 'ऐसी ही खाने-पीनेवाले की तकदीर लेकर पैदा हुआ होता तो मेरे भाग क्यों पड़ता? दो
दिन से घर में तेल-नमक नहीं है। आज थोड़े पैसे मिले ह, आज ले जाऊंगी कुछ सौदा।'

गुसाई — हाथ से अपनी जेब टटोलते हुए गुसाई ने संकोचपूर्ण स्वर में कहाए 'लछमा!' लछमा ने
जिज्ञासा से उसकी ओर देखा। गुसाई ने जेब से एक नोट निकालकर उसकी ओर बढ़ाते हुए
कहा, 'ले, काम चलाने के लिए यह रख ले, मेरे पास अभी और है। परसों दफ्तर से
मनीआर्डर आया था।'

लछमा — 'नहीं-नहीं, जी! काम तो चल ही रहा है। मैं इस मतलब से थोड़े कह रही थी। यह तो
बात चली थी, तो मैंने कहा,' कहकर लछमा ने सहायता लेने से इन्कार कर दिया

गुसाई — गुसाई को लछमा का यह व्यवहार अच्छा नहीं लगा। रूखी आवाज में वह बोला,
'दुःख-तकलीफ के वक्त ही आदमी आदमी के काम नहीं आया, तो बेकार है! स्साला!
कितना कमाया, कितना फूँका हमने इस जिंदगी में। है कोई हिसाब! पर क्या फायदा! किसी के
काम नहीं आया। इसमें अहसान की क्या बात है? पैसा तो मिट्टी है स्साला! किसी के काम
नहीं आया तो मिट्टीए एकदम मिट्टी!'

लछमा — परन्तु गुसाई के इस तर्क के बावजूद भी लछमा अडी रही, बच्चे के सर पर हाथ फेरते
हुए उसने दार्शनिक गंभीरता से कहा,

'गंगनाथ दाहिने रहें, तो भले-बुरे दिन निभ ही जाते हैं, जी! पेट का क्या है, घट
के खप्पर की तरह जितना

डालो, कम हो जाय। अपने-पराये प्रेम से हंस-बोल दें, तो वह बहुत है दिन काटने के
लिए।'

सूत्रधार — गुसाई ने गौर से लछमा के मुख की ओर देखा। वर्षों पहले उठे हुए ज्वार और तूफान का वहां कोई चिह्न शेष नहीं था। अब वह सागर जैसे सीमाओं में बंधकर शांत हो चुका था। रूपया लेने के लिए लछमा से अधिक आग्रह करने का उसका साहस नहीं हुआ। पर गहरे असंतोष के कारण बुझा-बुझा-सा वह धीमी चाल से चलकर वहां से हट गया। सहसा उसकी चाल तेज हो गई और घट के अंदर जाकर उसने एक बार शंकित दृष्टि से बाहर की ओर देखा। लछमा उस ओर पीठ किए बैठी थी। उसने जल्दी-जल्दी अपने नीजी आटे के टीन से दो-ढाई सेर के करीब आटा निकालकर लछमा के आटे में मिला दिया और संतोष की एक सांस लेकर वह हाथ झाड़ता हुआ बाहर आकर बांध की ओर देखने लगा। ऊपर बांध पर किसी को घूमते हुए देखकर उसने हांक दी। शायद खेत की सिंचाई के लिए कोई पानी तोड़ना चाहता था।

गुसाई — बांध की ओर जाने से पहले वह एक बार लछमा के निकट गया। पिसान पिस जाने की सूचना उसे देकर वापस लौटते हुए फिर ठिठककर खड़ा हो गया, मन की बात कहने में जैसे उसे झिझक हो रही हो। अटक-अटककर वह बोला, 'लछमा —।'।

लछमा ने सिर उठाकर उसकी ओर देखा। गुसाई को चुपचाप अपनी ओर देखते हुए पाकर उसे संकोच होने लगा। वह न जाने क्या कहना चाहता है, इस बात की आशंका से उसके मुंह का रंग अचानक फीका होने लगा। पर गुसाई ने झिझकते हुए केवल इतना ही कहा,

गुसाई — 'कभी चार पैसे जुड़ जाएं, तो गंगनाथ का जाग्र लगकर भूल-चूक की माफी मांग लेना। पूत-परिवारवालों को देवी-देवता के कोप से बचा रहना चाहिए।' लछमा की बात सुनने के लिए वह नहीं रुका।

पनी तोड़नेवाले खेतिहार से झगडा निपटाकर कुछ देर बाद लौटते हुए उसने देखा, सामनेवाले पहाड की पगडंडी पर सर पर आटा लिए लछमा अपने बच्चे के साथ धीरे-धीरे चली जा रही थी। वह उन्हें पहाडी के मोड तक पहुंचने तक टकटकी बांधे देखता रहा।

घट के अंदर काठ की चिड़ियां अब भी किट-किट आवाज कर रही थीं, चक्की का पाट खिस्सर-खिस्सर चल रहा था और मथानी की पानी काटने की आवाज आ रही थी, और कहीं कोई स्वर नहीं, सब सुनसान, निस्तब्ध!